International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(1): 224-228
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 26-11-2021
Accepted: 29-12-2021

डॉ अलका धरेन्द्र
शोध निर्देशिका, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान, भारत

प्रवीण शर्मा
शोधार्थी, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
प्रवीण शर्मा
शोधार्थी, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान, भारत

पंडित अखिलानंद शर्मा कृत दयानंददिग्विजयम् महाकाव्य का धार्मिक व नैतिक अनुशीलन एक युगबोध एवं रचनाधर्मिता का परिचय।

डॉ अलका धरेन्द्र, प्रवीण शर्मा

शोधसारः
आधुनिक संस्कृत काव्य विधा में निर्मित पंडित अखिलानंद शर्मा द्वारा प्रणीत दयानंद दिग्विजयम् महाकाव्य अर्वाचीन महाकाव्य परंपरा का अंग है ।इसमें तत्कालीन भारतवर्ष की संपूर्ण दयनीय दशा को कवि ने काव्यात्मक रूप में गुम्फित किया है । महाकाव्य की सर्जना में युग परिवर्तन के कारण रचनाधर्मिता में अंतर दृष्टिगोचर हुआ है । यद्यपि अर्वाचीन महाकाव्य प्राचीन महाकाव्य स्वरूप व परंपरा से प्रभावित है तथापि इसमें कतिपय अभिनव परिवर्तन परिलक्षित होते हैं जैसे महाकाव्य का नायक एक क्षत्रिय वंश या इतिहास प्रसिद्ध चरित्र न होकर तत्कालीन समाज का धार्मिक महापुरुष या योगी है । महाकाव्य में वैदिक धर्म दर्शन व मूल्यों को उजागर करने का अद्भुत प्रयास हुआ है।

कूटशब्दाः – वेद, दयानन्द, राष्ट्र, महर्षि, वैदिक धर्म, युग परिवर्तन।

प्रस्तावना

दयानंददिग्विजयम् महाकाव्य के प्रणेता पंडित अखिलानंद शर्मा का जन्म मत्स्य प्रदेशान्तर्गत बदायुँ प्रांत के चंद्रनगर नामक स्थान पर पिता श्रीमान् पंडित टीकाराम व माता सुबुद्धि देवी के घर विक्रम संवत् 1937 माघ मास तृतीय शुक्ला को हुआ था।[1] पंडित अखिलानन्द शर्मा बाल्यकाल से ही अद्भुत प्रतिभा के धनी थे । इनके वंश को विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ शारदा ने मानो अपना निवास स्थान बनाया था । [2] इनका वंश सनाढ्य नाम से अलंकृत हुआ।[3] घर पर पठन-पाठन का विशेष परिवेश होने के कारण पंडित शर्मा पर भी इसका प्रभाव रहा । कवि रत्न पंडित शर्मा एक उच्च कोटि के आधुनिक कवि हैं जिन्होंने अर्वाचीन संस्कृत साहित्य के लिए लगभग 108 रचनाओं के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। जिसमें लगभग 3,50,000 पद्य प्राप्त होते हैं। [4]

कवि रत्न पंडित अखिलानंद शर्मा की रचनाओं में दयानंद दयानंददिग्विजयम् महाकाव्य एक उच्च कोटि का महाकाव्य है जो युगबोध एवं अर्वाचीन रचनाधर्मिता का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें कवि ने 21 सर्गों व 2348 श्लोकों में महर्षि दयानंद सरस्वती के संपूर्ण जीवन चरित्र तथा दिग्विजय को प्रस्तुत किया है।

इसमें वैदिक धर्म व इसके प्रचार पर विशेष प्रकाश डाला गया है । महर्षि दयानंद सरस्वती का व्यक्तित्व निराला व दैवीय गुणों से युक्त था । महर्षि एक योगी [7], वैरागी, वैदिक धर्म के पुरोधा, श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ, नारी जाति के हितैषी, सच्चे गोपालक, अनाथो के नाथ, दीन दुखियों के सहयोगी, दानी [5], राष्ट्र, स्वतंत्रता, समानता, स्वाधीनता, स्वशासन के निष्ठावान् समर्थक, प्रकृति संरक्षक, परोपकारी [6], मधुर भाषी [8] तथा मानवता में विश्वास रखने वाले इत्यादि ऐसे ईश्वरीय गुणों से युक्त थे।

युगबोध एवं रचना धर्मिता:

यद्यपि यह महाकाव्य की सरणी वैदिक संस्कृति के अभ्युदय से निरंतर अनवरत प्रवाहित होती आ रही है परंतु रचनाधर्मिता में अंतर के कारण इसे दो भागों में विभक्त किया गया है । प्राचीन परंपरा तथा अर्वाचीन परंपरा । संस्कृतवांग्मय में सत्रहवीं सदी से आधुनिक परंपरा को स्वीकार किया गया है । प्रोफेसर राजेंद्र मिश्र अपनी रचना सप्तधारा में सत्रहवीं सदी से लेकर आज तक संपूर्ण रचित साहित्य को आधुनिक मानते हैं । पंडित बलदेव उपाध्याय सन् 1750 ईस्वीं से आधुनिक काल को स्वीकार करते हैं । संपूर्ण संस्कृतवांग्मय प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्य का एक दूसरे से अन्योन्याश्रित संबंध है । एक के बिना दूसरा पूर्णता को प्राप्त नहीं होता है । युग परिवर्तन के कारण ही रचनाधर्मिता में परिवर्तन परिलक्षित होता है । अर्वाचीन संस्कृतवांग्मय में रचनाधर्मिता के कारण एक विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ है कि इस युग की रचनाएं पौराणिक कथानकों की अपेक्षा वर्तमान परिस्थितियों, देश, काल, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा विविध कथानकों को आधार बनाकर रची गई हैं । इन रचनाओं में नायक - नायिका का स्थान राष्ट्र के महापुरुषों, धार्मिक पुरुषों, परिवर्तन के कारण रचनाधर्मिता की विभिन्न विधाओं में अंतर दृष्टिगोचर हुआ है ।

महाकाव्य का धार्मिक एवं नैतिक अनुशीलन :

महर्षि दयानंद सरस्वती वैदिक धर्म के पुरोधा थे तथा वह वेदों को ही सत्य मानते थे । कवि रत्न पंडित अखिलानंद शर्मा ने दयानंद दिग्विजयम् महाकाव्य में महर्षि के वैदिक धर्म के विमर्श को प्रस्तुत किया है ।महर्षि ने अवैदिक मतों का खंडन किया जिसमें श्राद्ध का संपूर्ण भारतवर्ष में विरोध किया व इसे अर्थहीन माना। यथा -

न लिखिता किल वेदचतुष्टये
मृतक देह निमित्तपराक्रिया ।
इयमतोपि कथं परिदर्शये-
ज्जगति सन्निगमोदितकल्पनाम् [9]

अर्थात् चारों वेदों में कहीं भी मृतक श्राद्ध का उल्लेख नहीं अतः जब तक इसका खंडन ना होगा तब तक वैदिक धर्म का प्रचार संभव नहीं है ऐसा दृढ़ निश्चय महर्षि दयानंद सरस्वती ने लिया ।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने मूर्ति पूजा व भागवत पुराण का सर्वत्र खंडन प्रस्तुत किया । यथा-

अधमबौद्धमतादुदयंगताम्
तर्जयन्
स सकलां सकलामतनोद् भूवम् [10]

अर्थात् बौद्ध मत से प्रकट हुई अधम पाषाण पूजा को वैदिक प्रमाणों से हटाकर ऋषि समस्त भूतल को दोबारा चेतन बना दिया।

मनुजनिर्मितभागवतादिका
बहुपुराण कथा जगतीतले ।
प्रथममस्ति निदानमदः कथं
कलयतान्निगमागमविस्तृतिम् [11]

अर्थात् इस जगत् में मनुष्य निर्मित विविध पुराणों की जो कथाएं प्रचलित हैं यह ही मनुष्य के विनाश का कारण है इनका खंडन किए बिना वैदिक धर्म का प्रचार बड़ा दुष्कर कार्य है ।

इन्होंने सर्वत्र प्रचार किया की वेदों में मूर्ति पूजा का कोई प्रमाण कहीं पर भी उपलब्ध नहीं होता है। यथा-

मूर्तिप्रपूजनपरं परिकल्यवादं।
स्वामी समस्तबुद्धमंडलतो ययाचे
वेद प्रमाण मती गर्जन तुल्य वाचा
मन्ये न कश्चिदशकत्पुरतोस्यवक्तुम् [12]

अर्थात् स्वामी जी अति उच्च स्वर से गर्जकर सबसे मूर्ति पूजन के संबंध में वेद मंत्रों का प्रमाण मांगने लगे परंतु किसी ने एक भी प्रमाण नहीं दिया ।

पुराण मिथ्या है अतः वैदिक धर्म को ही अपनाना चाहिए। [13] महर्षि अनुसार मृतक शरीर के लिए वेद में कोई कर्म नहीं

लिखा गया है ।[14] गुरुकुल ही सबसे बड़ा तीर्थ है इसके अतिरिक्त अन्य कोई तीर्थ नहीं है। यथा –

तीर्थं तदेव निगदन्ति बुद्धाः प्रशस्तं
वेदानवाप्य सकलांगपरान्तु यस्मिन् ।
मृत्योर्मुखाच्च्युतिमवाप्य विमुक्त दुःखो
जीवोमरत्वमुपजाति निरस्तदोषः।। [15]

महर्षि ने संपूर्ण आर्यावर्त में राजाओं से आह्वान किया कि वैदिक धर्म को अपनाओ तथा मनु निर्दिष्ट मार्ग पर चलो ।[16] स्वामी दयानंद सरस्वती के वैदिक धर्म चिंतन को प्रकट करते हुए कवि श्रीयुत् पंडित अखिलानंद शर्मा ने महाकाव्य में शैव मत का खंडन करते हुई उल्लेख किया है कि संसार में निवर्तमान समय में जो भी मत प्रचलित हो रहे हैं उनका वेद से लेश मात्र संबंध भी नहीं है। यह विवेकहीन मानवों की कल्पना मात्र परिलक्षित होती है ।

यथा-

न मतानि वेदनिचये गदिता
न्यलमत्र यानि बहुधा जगति
प्रथितानि तत्तदुपकल्पनया
ऽधममानवैरनुकृतानिC [17]

शिव जिसमें निखिल सृष्टि शयन करती हो वह कदापि जन्म नहीं प्राप्त कर सकता है। अतः इसे अजन्मा होने की संज्ञा प्रदान की गई है । यही संपूर्ण जगत् में प्रसिद्धि को प्राप्त है । निवर्तमान समय में जो शिव माना गया है वह एक नटराज था ।इसमें शिव की कल्पना करना अर्थहीन है ऐसा सभी मनुष्यों को जान लेना चाहिए।
यथा

न शिवःकदापि जनिमेति परः
प्रथितं चकास्ति भुवने तदिदम्
परमेषः योऽस्ति शिवनामपरः
स नटो न नेति हृदये ध्रियतां [18]

महाकाव्य में कवि पंडित शर्मा ने अवतारवाद का अकाट्य व तार्किक खंडन प्रस्तुत किया है। निवर्तमान समय में इस अवतारवाद की अवधारणा को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग माना गया है महर्षि का मानना था कि जिस ईश्वर परमपिता परमेश्वर ने इस संपूर्ण सृष्टि का सृजन किया है उसे भला मनुष्य रूप में अवतार लेने की क्या आवश्यकता पड़ी होगी । ऐसी परंपराओं व मान्यताओं का स्वामी जी ने सर्वत्र खंडन किया है ।[19]
स्वामी जी का विश्वास था कि ईश्वर प्रदत्त कर्मों का भोग मनुष्य को भोगना ही पड़ता है इसके लिए चाहे वह कितने ही राम का नाम जप ले अतः कर्म अनुकूल फलों का भोग करते हुए सभी को श्रेष्ठ मार्ग पर चलना चाहिए।[20] कर्मों के आधार पर अवतार भी जीवो का संभव है ईश्वर या परमेश्वर का नहीं। मुक्त जीव या स्वतंत्र जीव जन्म मरण के चक्र में आते हैं ईश्वर नहीं ।
यथा

अवतारोऽपि जीवस्य संभवत्यनपायिनः
न कथञ्चन पक्षे मे परमेश्वरसम्भवः [21]

जिस परमेश्वर को वेदों ने अकाय, अव्रण और अस्नावरी इत्यादि संज्ञा प्रदान की है। फिर उस परमात्मा का देह युक्त होना कैसे संभव माना जाए अर्थात् यह संभव नहीं है।
यथा

अकाय इति यं वेदः कथयत्यनिशं पुनः
स कथं कायवानत्रावतरत्यद्भुतं महत् [22]

यदि ऐसा मान भी लिया जाए कि वह सर्वशक्तिमान् दयालु, परमात्मा आकर एक शरीर में प्रविष्ट हो जाए तो संपूर्ण संसार का भरण -पोषण नियंत्रण व संवर्धन कौन व कैसे करेगा।[23]

परमेश्वर कर्म बंधन से मुक्त है, उसे किसी प्रकार का क्लेश भी नहीं होता है तथा वह गर्भाशय में आकर प्रविष्ट भी नहीं होता है। शास्त्रों ने भी यही सिद्धांत प्रतिपादित किया है।

यथा-

न कर्म बन्धनं तत्र न क्लेश कलनं मतम्
न विपाकाशयावासस्तस्य शास्त्रेषुकल्पितः [24]

नैतिक मूल्यों का महर्षि दयानंद सरस्वती अगाध भंडार थे । कवि रत्न ने इस महाकाव्य के माध्यम से विविध नैतिक व सामाजिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है। महर्षि ने सर्वत्र जाति व्यवस्था का विरोध किया । वह इसे राष्ट्र उन्नति में बाधक समझते थे।
यथा

जातिभेदपरं कश्चित्प्रस्तूय विषयं ततः
सुमतिं कुमतिं सर्वलोकगामवदत्परां [25]

महर्षि जी ने यज्ञशाला, गौशाला, व पाठशालाओं का निर्माण करवाया व इसे एक सामाजिक तथा नैतिक मूल्य के रूप में देखा।

यथा –

यज्ञशाला गवां शालाः पाठशालाश्च सत्वरम् ।
विषये कल्पयामास निजे धर्मपरायणः [26]

महर्षि दयानंद सरस्वती ने हमेशा स्त्रियों को सम्मान व अधिकार देने का समर्थन किया तथा निरंतर रूप से इस दिशा में प्रयास करते रहे ।

यथा

शोचनीयदशा समन्विता
वास्तवे पशुसमान धर्मिणः
सम्भवन्ति किल ये निज स्त्रियं
तोषयन्ति न समस्तसाधनैः [27]

इन्होंने भारतीय समाज में प्रचलित वेश्यावृत्ति का पुरजोर विरोध किया व राष्ट्र उन्नति में इसे बाधा माना है।

यथा

जगाद चैतन्यदिगानवाञ्छा
भवेत्तदा साम्पदप्रगीतिः
सुखं विधेया परमात्मलब्धाः
न कर्हिचिद्वारवधूभिरुक्ता [28]

स्वामी जी स्वदेशी शासन, स्वतंत्रता, माता-पिता- गुरु का सम्मान, स्वदेशी चिकित्सा आदि के पक्षधर व समर्थक थे। महाकाव्य में महर्षि का भारतवर्ष की दयनीयदशा का वर्णन उनके राष्ट्र प्रेम व चिन्तन को प्रकट करता है । यथा –

केयमस्य भुवनस्य दुर्दशा
संगतास्ति पर्मेश्वर ! प्रभो !
या न याति विलयं कुबुद्धिभि
र्वर्द्धिता प्रतिदिनं विवर्धते [29]

निष्कर्ष:

दिग्विजय महाकाव्य में उन्नीसवीं सदी के तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य को सूचित्रित किया गया है। धार्मिक व नैतिक मूल्यों में परिलक्षित हुई न्यूनता को स्वतंत्र भाव से प्रकट किया गया है। महर्षि दयानंद का चिंतन वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक दृष्टिगोचर होता है । यह ग्रन्थ वैदिक धर्म का समर्थन करता है तथा विविध आडम्बरों के माध्यम से धर्म के नाम पर संसार में प्रचलित लूट – पाट व आपसी कलह का विरोध करता है। विविध तर्कों व दृष्टान्तों के रूप में यह सिद्ध करता है कि वैदिक धर्म व चिंतन ही मानववाद का समर्थक है तथा प्रकृति को भरपूर सम्मान प्रदान करता है । धर्म एक व्यापक शब्द है तथा इसे बृहद् अर्थों में ही देखा जाना चाहिए। इन मूल्यों को अपनाकर व्यक्ति व राष्ट्र निश्चित रूप से परम उन्नति को प्राप्त हो सकता है । युग परिवर्तन तथा रचनाधर्मिता में अंतर के कारण ही आधुनिक संस्कृत काव्य विधा विस्तृत, विशालकाय तथा सुसमृद्धि को वर्तमान समय में प्राप्त हुई है ।

संदर्भ:

1. शर्मा, पं०अखिलानन्द. दयानन्ददिग्विजयम् महाकाव्य. दिल्लीः आर्यप्रकाशन, 1997. भूमिका
2. वही, सर्ग- 21, पद्य 58
3. वही, सर्ग 21, पद्य 55
4. सार्धत्रिलक्षिमित.....विहिताः निबन्धाः
5. अखिलानन्द शर्मा, दयानन्ददिग्विजयम् महाकाव्य, सर्ग- 5 पद्य- 69/70
6. वही, सर्ग- 5, पद्य 60
7. वही, सर्ग- 5, पद्य 2/4/6/8/10
8. वही, सर्ग- 14, पद्य 64
9. वही, सर्ग- 4, पद्य 7
10. वही, सर्ग- 4, पद्य 03
11. वही, सर्ग- 4, पद्य 06
12. वही, सर्ग- 6, पद्य 88
13. वही, सर्ग- 6, पद्य 69
14. वही, सर्ग- 10, पद्य 61
15. वही, सर्ग- 10, पद्य 73
16. वही, सर्ग-10, पद्य 74
17. वही, सर्ग- 17, पद्य 3
18. वही, सर्ग- 17, पद्य 4
19. वही, सर्ग- 11, पद्य 4
20. वही, सर्ग- 11, पद्य 6
21. वही, सर्ग- 14, पद्य 83
22. वही, सर्ग- 14, पद्य 84

23. वही, सर्ग- 14, पद्य 85
24. वही, सर्ग- 14, पद्य 86
25. वही, सर्ग- 7, पद्य 84
26. वही, सर्ग- 7, पद्य 163
27. वही, सर्ग- 18, पद्य 34
28. वही, सर्ग- 15, पद्य 60
29. वही, सर्ग- 18, पद्य 49